IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का आवास एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

Sachchida Nand Pathak, Research Scholar, Department of Education, kalinga University
Dr. Aditya Prakash Saxena, Professor, Department of Education, kalinga University

सार–

भारतीय समाज में नैतिक एवं नैतिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हुआ है। हालाँकि आज़ादी से पहले हमारे पास एक चीज़ थी जिसे अब हमने काफी हद तक खो दिया है और वह है चरित्र पर गर्व और नैतिक और नैतिक मूल्यों के प्रति हमारी सूझबूझ। राज्य को पूर्ण विश्वास था कि स्वतंत्रता प्राप्त कर हम नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर चमत्कार कर सकेंगे। निःसंदेह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश ने सभी क्षेत्रों में तेजी से विस्तार किया लेकिन हमने अपना चरित्र और अपने मूल्यों पर गौरव खो दिया। यह ठीक ही कहा गया है कि 'यदि धन खो गया, तो कुछ भी नहीं खोया, यदि चरित्र खो गया, तो सब कुछ खो गया' यह न केवल व्यक्ति के लिए, बल्कि राष्ट्र के सही मार्ग के लिए भी सत्य है। इसलिए हम मनुष्य को सही रास्ते पर ले जाने, सार्वभौमिक भाईचारा पैदा करने और सत्य, अच्छाई और सुंदरता के पूर्ण मूल्यों को प्राप्त करने के लिए मूल्यों की आवश्यकता का सारांश दे सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता लोगों को सच्चे अर्थों में अच्छा इंसान बनाने के लिए सत्य, धार्मिकता, शांति, प्रेम और अहिंसा जैसे सभी पांच मूल मूल्यों को विकसित करना है। प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया है।

प्रस्तावना–

शिक्षा जगत् समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधार षिला है। स्वामी विवेकानंद के षब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा का लक्ष्य ही है चरित्र निर्माण। आज तक के सभी शिक्षाआयोगों ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता को एवं मूल्यों को अनिवार्यता से स्वीकार किया है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। कवि रवींद्रनाथ और डॉ. राधाकृष्ण ने भी घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरूत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाष का कारण बनेंगी। आज यही संघटित हो रहा है।

मूल्य और आध्यात्म–

मूल्य एवं आध्यात्मिकता न सिर्फ मानव सभ्यता के केंद्र है बल्कि मनुष्यों द्वारा निर्मित अपने सभी वैध प्रतिष्ठानों तथा उनके नैतिक दर्षनों के भी केंद्र है। परंपरागत रूप में मूल्यों एवं आध्यात्मिकता को धर्म की एक महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता रहा है। मूल्य एवं आध्यात्मिकता को पारिवारिक इकाई का भी मूल तत्त्व माना जाता है। फिर भी विगत 2500 वर्षो से सभी महान एवं सामान्य सभ्यताएँ मनुष्य की कमियों, कमजोरियों के निवारण को लेकर चिंताग्रस्त रही है। कुछ महान विभुतियों की बात अगर छोड़ दें तो सामूहिक रूप से हम सभी लोग अपने मूल्यों एवं नैतिक सिद्धांतों का पालन नहीं कर पाए। यही कारण है कि लंबे समय से धीर–धीरे इन मूल्यों का ह्यस

होता जा रहा है और आज भी हम मूल्य ह्रास के दौर से गुजर रहे है। वर्तमान परिवेश में पारम्परिक शिक्षा विद्यार्थियों में विशिष्ट मानसिक दक्षताओं और ज्ञान का ही विकास करती है। इससे वे केवल अपनी जीविका कमाने के ही योग्य बनते है। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा इतनी व्रीव हो गई है कि छात्रों के समक्ष उच्च शिक्षाके चयन की मजबूरी रहती है और इसके लिए वे अपने मूल्यों, अपनी संस्कृति, एकता, सत्यनिष्ठा एवं अन्य मानसिक दक्षताओं की बलि देते है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन मुल्यों के द्वारा ही जीवन सुखी बनता है। इसके द्वारा ही एक विशिष्ट पुरूष अथवा स्त्री का निर्माण होता है जो सभ्य समाज के नवनिर्माण में गुणात्मक भुमिका का निर्वहन करने के योग्य बनते है।

मूल्यों का वर्गीकरण–

प्रायः लोग यह सोचते है कि सभी मूल्य प्रकृति से नैतिक होते है तथा मूल्यों पर आधारित निर्णय का अर्थ के आधार पर निर्णय लेना मानते है। वास्तव में अनेक मूल्य ऐसे होते है जो नैतिकता से क्षेत्र से बाहर होते है, उदाहरणार्थ– बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, राजनीतिक, वैयक्तिक, आर्थिक, तथा सामाजिक मूल्य। नैतिक मूल्य सही व गलत आचरण के निर्देशक है।

साहित्य की समीक्षा–

सबिता मिश्रा (2009) ने उड़ीसा के 510 पुरूष व महिला शिक्षक जो ग्रामीण व षहरी थे के मूल्य निर्धारण का अध्ययन किया। इन्होनें पाया कि ग्रामीण व शहरी प्रभावी शिक्षक, सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अलग थे जबकि ग्रामीण व षहरी अप्रभावी शिक्षक सैद्धान्तिक, सामाजिक व राजनैतिक मूल्यों में समान थे।

राकेशराय और अनिताराय (2012) ने एनसीआर में निजी और सरकारी विश्वविद्यालयों में कार्यरत तकनीकी शिक्षकों के बीच मूल्यों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने संग्रह डेटा और व्याख्या परिणाम के लिए डॉ. डॉ अहलूवालिया द्वारा शिक्षक मूल्य सूची का उपयोग किया। यह अध्ययन सरकारी विश्वविद्यालयों में काम करने वाले टी फर्स्ट तकनीकी शिक्षक और निजी विश्वविद्यालयों में काम करने वाले तकनीकी शिक्षकों के दो समूहों तक सीमित था। कुल नमूने में 130 तकनीकी शिक्षक शामिल थे। 150 का. यह पाया गया कि सैद्धांतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों के संबंध में तकनीकी शिक्षकों के बीच कोई अंतर नहीं था। लेकिन सरकारी और निजी तकनीकी शिक्षकों में सौंदर्य, राजनीतिक और आर्थिक के संबंध में कुछ मतभेद हैं। शिक्षा का मूल उद्देश्य हमारी गौरवशाली राष्ट्रीय विरासत और मानव सभ्यता की उपलब्धियों के बारे में कौशल और ज्ञान और जागरूकता पैदा करना है, एक बुनियादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना है और देशभक्ति, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और शांति के आदर्शों और हमारे संविधान की प्रस्तावना में प्रतिपादित सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता। मूल्य शिक्षा सैद्धांतिक और व्यावहारिक विचार, सामाजिक–भावनात्मक विकास और विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में शिक्षा, शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करना और उनका मूल्यांकन करना। . इस पेपर में मैंने तकनीकी शिक्षकों के लिए मूल्यों के कई पहलुओं पर चर्चा की है और पाया है कि मूल्यों को सामग्री, पर्यावरण, शिक्षकों और परिवार के साथ भी शामिल किया जाना चाहिए।

विजयश्री (2006) ने मूल्यों के बारे में अध्ययन किया और बताया कि आधुनिकीकरण प्रक्रिया के कारण मूल्य संकट उत्पन्न हुआ, जो मानव जीवन में कई समस्याओं, चिंताओं और चिंताओं के साथ आया है, जिससे इसकी मूल सरल प्रकृति खतरे में पड़ गई है। बढ़ती वैश्विक गरीबी, प्रदूषण, भुखमरी, बीमारी, बेरोजगारी, असामाजिकता,

जाति व्यवस्था, बाल श्रम, लैंगिक असमानता, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, हिंसा, विकलांगता, प्राकृतिक संसाधनों का शोषण और ऐसी कई बुराइयों ने विश्व पर मूल्य–संकट पैदा कर दिया है। ईमानदारी, ईमानदारी, नैतिकता और मानवता जैसे मूल मानवीय मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और इस प्रकार, मानव समाज में एक बड़ा परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान युग की समस्याओं को दूर करने के लिए व्यक्तियों में मूल्यों का विकास तथा शैक्षिक व्यवस्था के साथ–साथ समाज में मूल्यों को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

कुमार (2006) ने "हिमाचल प्रदेश" के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के महिला माध्यमिक विद्यालय के प्रशिक्षुओं के बीच पर्यावरण जागरूकता और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक से एक अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि ग्रामीण और शहरी महिला प्रशिक्षुओं में लगभग एक ही तरह की धारणा है। जहां तक धार्मिक मूल्यों, सौंदर्य मूल्य और स्वास्थ्य मूल्य का सवाल है। औसत स्कोर के आधार पर प्रशिक्षित ग्रामीण महिला शिक्षक शहरी समकक्षों की तुलना में मूल्यों के प्रति अधिक झुकाव दिखाती हैं। पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक मूल्य के साथ–साथ स्वास्थ्य मूल्य के बीच सकारात्मक सह–संबंध मौजूद है।

चन्द्रशेखरन (2008) ने सुझाव दिया कि मूल्य–उन्मुख शिक्षा समय की मांग है कि शिक्षण केंद्रों में मूल्य–उन्मुख शिक्षा को विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाए।

सुमिता (2018) ने पाया कि वैश्वीकरण ने न केवल दुनिया भर के आर्थिक परिदृश्य में उथल–पुथल ला दी है, बल्कि इसने मानव जीवन और संबंधों के हर पहलू को भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने पारिवारिक जीवन और मानवीय संबंधों में बाजार संस्कृति की शुरुआत की है।

सिंह (2007) ने वकालत की कि नैतिक मूल्य हमेशा दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों के मूल में रहे हैं और हमारे समय की काली वास्तविकताओं के लिए ऐसे मूल्यों पर अधिक जोर देने और जोर देने की आवश्यकता है। शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान आधारित शिक्षा और कौशल के प्रावधान तक सीमित नहीं है, क्योंकि यह सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों वाले समग्र मानवों का पोषण करना भी चाहता है जो जीवन को जीने लायक बनाते हैं।

शर्मा (2006) ने "हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर के पूर्व–सेवा और सेवाकालीन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्य अभिविन्यास का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक से एक अध्ययन किया। मुख्य निष्कर्ष यह था कि सेवारत माध्यमिक पुरुष शिक्षक धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य लोकतांत्रिक मूल्य, सौंदर्य मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञान मूल्य, घरेलू मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य और स्वास्थ्य मूल्य पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं। औसत अंकों के आधार पर, सेवारत माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों को पूर्व–सेवा माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षकों की तुलना में स्वास्थ्य मूल्य पर अधिक विश्वास है। सेवा माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षक और सेवा–पूर्व माध्यमिक विद्यालय की महिला शिक्षक धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, शक्ति मूल्य और पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं।

नूका हैथर (2010) ने उच्च शिक्षा में मूल्य शिक्षण के लिए षिक्षक विकास कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि शिक्षक विकास में अच्छी निति निर्माण के कार्यक्रमों की आवश्यकता है। जिससे अच्छे शिक्षकों का निर्माण हो सके।

नरेन्द्र व अन्य (2011) ने अपने अध्ययन में सूचना – संचार तकनीकी के माध्यम से शिक्षक को प्रभावशाली कैसे बनाया जा सकता है, पर पुना के एक विद्यालय में अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि अन्तक्रिया को

सूचना–संचार तकनीक से बढ़ाया जा सकता है जिसके फलस्वरूप शिक्षण भी प्रभावशाली हो जायेगा तथा छात्रों में मूल्य भी विकसित किये जा सकेंगे।

ललित मोहन शर्मा व अन्य (2012) ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य व मूल्यों के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि जिन छात्रों व छात्राओं में प्रजातांत्रिक मूल्य व आर्थिक मूल्य ज्यादा है, उनका समायोजन भी अच्छा है।

गोयल सुनीता (2013) शिक्षकों की अभिवृत्ति व्यवसाय संतुष्टि एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

- ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना।
- शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

डॉ॰ नीतू सिंह तोमर ;2016 मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। इन मूल्यों का एक सामाजिक– सांस्कृतिक आधार या पृष्ठिभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता मिलती है। इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव यह होता है कि हिन्दुओं में विवाह–विच्छेद की भावना पनप नहीं पाती है और विधवा–विवाह को उचित नहीं माना जाता है। सामाजिक मूल्य सामाजिक मान है जो कि सामाजिक जीवन के अन्तः सम्बन्धों को परिभषित करने में सहायक होते है।

वुड्सः– ;2017 मूल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के समान्स सिद्धांत है। मूल्य केवल मानव व्यवहार की दिशा निर्धारण ही नहीं करते, बल्कि अपने आप में आदर्श ओर उद्देश्य भी होते है।'' हमारा साहित्य भले वो किसी भी भाषा में हो उसमें मूल्यों के दर्शन होते है। साहित्य और मूल्यों का अटूट रिश्ता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही मूल्यों का विवरण हम देखते है। मूल्यों का हमेशा आदर होना चाहिए

अध्ययन के उपकरण–

वर्तमान शोध में में विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के जानने के लिए व आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए व आत्म निर्मित प्रश्नावली/उचित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

आंकडो का विश्लेषण एवं व्यांख्या–

तालिका–1

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का आवास के सदंर्भ में अध्ययन

मूल्य	छात्रावासी संख्या 190	गैर छात्रावासी संख्या 410

नैतिक मूल्य	22.3	28.3
सामाजिक मूल्य	32.9	26.3
राष्ट्रीय मूल्य	25.7	29.2

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22–28	24–30	23–29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष– सारणी के अनुसार शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के नैतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के प्राप्तांक क्रमषः 22.3 व 25.7 है जो मूल्य मापनी के मापदण्डानुसार औसत स्तर के हैं। छात्रावास में नहीं रहने वाले विद्यार्थियों के नैतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के प्राप्तांक क्रमशः 28.3 व 29.2 है जो मूल्य मापनी के मापदण्डानुसार उच्च स्तर के हैं। शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य उच्च स्तर का है व छात्रावास में नहीं रहने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य औसत स्तर का है।

तालिका–2

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का पारिवारिक पृष्ठभूमि के सदंर्भ में अध्ययन

मूल्य	संयुक्त परिवार संख्या 220	एकल परिवार संख्या 380	उच्च आय वर्ग संख्या 120	निम्न आय वर्ग संख्या 480
नैतिक मूल्य	29.9	24.3	23.3	27.2
सामाजिक मूल्य	33.3	23.3	26.7	31.3
राष्ट्रीय मूल्य	29.2	24.5	24.1	30.1

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22–28	24–30	23–29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष–मापनी के मापदण्डानुसार सारणी का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं जबकि एकल परिवार में रहने वाले छात्रों के नैतिक व राष्ट्रय मूल्य तो औसत स्तर के हैं लेकिन सामाजिक मूल्य निम्न स्तर का है। इसी प्रकार

उच्च आय वर्ग वाले छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं तथा निम्न आय वर्ग वाले छात्रों के सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य तो उच्च स्तर के हैं लेकिन नैतिक मूल्य औसत स्तर का है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- आरोन, पी.जी., (2016) "शैक्षणिक मनोविज्ञान में अनुसंधान की आवश्यकता", शिक्षा के अध्ययन में अनुसंधान की जरूरतों में, संस्करण। उदय शंकर और एस. पी. अहलूवालिया, कुरूक्षेत्रः कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय पुस्तकें और स्टेशनरी की दुकान।
- इब्राहीम. पी.पी. (2017) प्रश्न पूछने के कौशल के विकास में सूक्ष्म शिक्षण की प्रभावशीलता, अप्रकाशित एम–एड। निबंध.एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, बड़ौदा, भारत।
- ऐसमोग्लू, डारोन और जोशुआ एंग्रिस्ट। 2000. "शिक्षा पर सामाजिक प्रतिफल कितने बड़े हैं? अनिवार्य स्कूली शिक्षा कानूनों से साक्ष्य" एनबीईआर मैक्रोएनुअल 15 संस्करणों में, बी.एस. बर्नान्के और के. रोगॉफ़। कैम्ब्रिज, एमए, एमआईटी प्रेसः 9–59।
- अदावल, एस.बी. एड. (2016).शिक्षा की तीसरी भारतीय वर्ष पुस्तकः शैक्षिक अनुसंधान। नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- अग्रवाल जे.सी. (2016)। भारत में शिक्षकों की भूमिका, स्थिति, सेवा शर्तें और शिक्षा। नई दिल्लीः डोबा हाउस प्रकाशन।
- अग्रवाल, विजय लक्ष्मी. "संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक चर के संबंध में किशोरों की सामाजिक परिपक्वता", पीएच.डी. थीसिस, 2015, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। आहूजा, जी.सी. "मैनुअल ऑफ़ ग्रुप टेस्ट ऑफ़ इंटेलिजेंस", 1998, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा।
- अजय कुमार (2018).'शिक्षक प्रशिक्षु – शिक्षक शिक्षा'. एडुट्रैक्स, वॉल्यूम। 6,नहीं. 5, हैदराबाद। नीलकमल प्रकाशन।
- एलन डी. डब्ल्यू. (2015) माइक्रो टीचिंग– ए डिस्क्रिप्शन, स्कूल ऑफ एजुकेशन, स्टैंडफोर्ड यूनिवर्सिटी।
- एलन, डी. डब्ल्यू. और रयान के.ए. (2017) माइक्रो–टीचिंग रीडिंग, मास एडिसन वेस्ले, कैलिफ़ोर्निया।
- ऑलपोर्ट, जी.डब्ल्यू. (2014) व्यक्तित्व और दृष्टिकोण – एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या, आनंद, एस.पी. (1992)। शिक्षा में गुणवत्ता की खोज में आरसीई मानसिक स्वास्थ्य स्केल, शोवन, भुवनेश्वर।
- आनंद, सी. एल. एट अल., (2014) उभरते भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, नई दिल्ली, एनसीईआरटी
- आनंद, सी.एल. (2018)। शिक्षक शिक्षा के पहलू एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली।
- आनंद, एस.पी. (1994)। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी–एड) के संगठनात्मक माहौल का विश्लेषण। शिक्षा में रुझान और विचार, वॉल्यूम। ग्यारहवीं, 80–89 . आनंद, एस.पी. (1996), इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, नवंबर अंक, नई दिल्लीः हिल पब्लिकेशन।

- एंजेनेंट, एच. एंड मैन, ए. (1989): डच प्रथम ग्रेडर में बुद्धिमत्ता, लिंग, सामाजिक परिपक्वता और सामाजिक तत्परता। सामाजिक व्यवहार एवं व्यक्तित्वः एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 17(1), 205।
- अरोड़ा, के.एल. (1986) .एजुकेशन इन द इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, लुधियाना, प्रकाश ब्रदर्स।
- अरोरा, के. (1978), प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों के बीच अंतर, नई दिल्लीः एस. चंद एंड कंपनी लिमिटेड।
- एरो, केनेथ जे., रॉबर्ट सोलो, पॉल पोर्टनी, एडवर्ड ई. लीमर, रॉय रेडनर, और हॉवर्ड शूमन। 1993. आकस्मिक मूल्यांकन पर एनओएए पैनल पर रिपोर्ट। संघीय रजिस्टर 58:10 में, वाशिंगटन, डी.सी.: (जनवरी 15): 4602–4614।